वर्षो में जनसंख्या संबंधी तत्वों की स्थिति का अध्ययन इसमें शामिल है, जिसके विभिन्न पहलुओं का बारीकी से अध्ययन पर प्रवृति का प्राप्त कर लिया जाता है और फिर वर्तमान संसाधनों की दृष्टि से वर्तमान संदर्भ में उसका अध्ययन किया जाता है। इन्हीं निष्कर्षों के आधार पर भविष्य के लिए भी जनसंख्या का पूर्वानुमान अथवा प्रक्षेपण किया जाता है। इसके लिए अंकगणितीय एवं ज्यामितीय विधियों का सहार लिया जाता है। ऐतिहासिक पक्ष के आधार पर समकालीन पक्ष का विश्लेषण संभव होता हैं। इसलिए किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या संबंधी विशेषताओं/तत्वों का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक एवं समकालीन विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। इसी आधार पर विकसित एवं विकासशील देशों की जनसंख्या संबंधी नीतियों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

जहाँ तक व्यावहारिक उपागम का संबंध है यह जनसंख्या संबंधी तथ्वों के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन करने पर बल देता है। यद्यपि विकसित एवं विकासशील देशों में विश्व को बाँटा जाता है परन्तु सभी विकासशील एवं विकसित देशों में जनसंख्या संबंधी समानताएँ नहीं पाई जाती है। विकसित देशों एवं विभिन्न विकासशील देशों के मध्य इस संदर्भ में पर्याप्त विषमताएँ मिलती है यही कारण है कि क्रमबद्ध, प्रादेशिक, ऐतिहासिक अथवा समकालीन उपागम को अपनाने के बावजूद जनसंख्या संबंधी तत्वों के अध्ययन के लिए व्यावहारिक उपागम को अपनाना जरूरी तत्वों के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन किया जाता हैं सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष दो अलग-अलग पहलुओं पर जोर देते है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या संबंधी विभिन्न तत्वों का प्रदेश की वर्तमान स्थिति सतत विकास के लिए व्यावहारिक संदर्भ में अध्ययन करना अति-आवश्यक हो जाता है। भारत के माध्यमिक स्कूलों में जनसंख्या शिक्षा पर जोर दिया जाना इसी व्यावहारिक पक्ष का एक हिस्सा है।

व्यावहारिक उपगाम अथवा आचारपरक उपागम से सामाजिक पक्षों के अध्ययन में अभूतपूर्व क्रांति आई है इस उपागम की यह मान्यता है कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के विकास में भौतिक वातावरण के साथ ही साथ मानवीय व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है। यही स्थिति जनसंख्या संबंधी तत्वों के साथ भी लागू होता है। जनसंख्या के तत्व भी समय और स्थान के अनुसार मानवीय व्यवहार से प्रभावित एवं नियंत्रित होता है।

तंत्र या प्रणाली उपागम **हम्बोल्ट** के क्रमबद्ध उपागम से मिलता-जुलता है लेकिन दोनों एक नहीं है। तंत्र उपागम के अंतर्गत तत्व और संबंधों की व्याख्या की जाती है। भौगोलिक तंत्र कार्यिक (Functional) एवं संरचनात्मक (Structural) दो प्रकार के होते हैं। इन्हीं तंत्रों की सहायता से जनसंख्या संबंधी तत्वों का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए तंत्र के तत्वों के संबंध का पूर्णज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा यह विधि दोषपूर्ण साबित हो जाता है। तंत्र उपागम के अपनाने से सिद्धांत बनाने एवं तत्पश्चात् मॉडल निर्माण में आसानी हो जाती है।

इस प्रकार जनसंख्या भूगोल के अध्ययन के कई उपागम प्रचलित है। इनके अलग-अलग गुण एवं दोष है। परन्तु सूक्ष्म अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ये सभी उपागम परस्पर प्रतिरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। आवश्यकतानुसार इनका सम्मिलित अध्ययन भी किया जाना संभव है।

1.6 सारांश (Summing-up)

मानव-भूगोल में बढ़ते विशिष्टीकरण के कारण जनसंख्या भूगोल एक स्वतंत्र शाखा बन गया। इसके तहत मानवीय जनसंख्या एवं इससे जुड़े विभिन्न पक्षों का भौगोलिक अध्ययन किया जाता है। सर्वप्रथम **ग्लेन ट्रिवार्था** ने 1953 ई० में जनसंख्या भूगोल पर अपने क्रांतिकारी विचार रखे थे। जिससे विश्वभर के भूगोलवेता जनसंख्या एवं इससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं एवं पक्षों के गहन अध्ययन को प्रेरित हुए।

जनसंख्या का संबंध भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों ही कालों से है। इन समयों में जनसंख्या की स्थिति का स्थान के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ही वस्तुतः जनसंख्या भूगोल है। ट्रिवार्था के अनुसार "जनसंख्या भूगोल का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर जनसंख्या के वितरण में प्रादेशिक अंतरों को समझना है। जनसंख्या वह संदर्भ बिन्दु है जहाँ से सभी अन्य तत्वों का अवलोकन एवं विश्लेषण किया जाता है। इसी तरह कई अन्य विद्वानों ने भी इसे अपनी-अपनी तरह से परिभाषित किया है।

क्लार्क महोदय Population Geography नामक अपनी पुस्तक में जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा है। **ट्रिवार्था** और **जेलिंस्की** ने भी तीन भागों में ही अध्ययन क्षेत्र को बांटा है। जबकि लेखक के अनुसार जनसंख्या भूगोल के अध्ययन के पाँच प्रमुख क्षेत्र है। जिसमें संकल्पनात्मक एवं आधारभूत क्षेत्र, सैद्धांतिक क्षेत्र, गतिशील क्षेत्र, भौगोलिक क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्र शामिल है।

जनसंख्या एवं क्षेत्रीय विकास के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। ऐसी विशेषताओं के अध्ययन के लिए क्रमबद्ध, प्रादेशिक, ऐतिहासिक, समकालीन, व्यावहारिक एवं प्रणाली उपागमों का सहारा लिया जाता है। ये सभी उपागम अलग-अलग तरह से जनसंख्या का अध्ययन करते है। इनके अलग-अलग से जनसंख्या का अध्ययन करते है। इनके अलग-अलग गुण-दोष है। किन्तु सूक्ष्म विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि ये सभी उपागम अंतरसंबंधित हैं तथा एक-दूसरे के पूरक भी है। कभी-कभी एक से अधिक उपागम का सहारा भी जनसंख्या संबंधी विशेषताओं के अध्ययन में लेना पड़ता है।

1.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

1. "मानव भूगोल, भौगोलिक वातावरण और मानवीय कार्यो एवं गुणों के संबंधों के स्वरूप और वितरण का अध्ययन है।" यह किस विज्ञान का कथन है।

   (क) हम्बोल्ट (ख) हटिंग्टन (ग) मिंशुल (घ) ट्रिवार्था

2. ग्लेन ट्रिवार्थ ने किस वर्ष जनसंख्या विषय पर नए एवं क्रांतिकारी विचारों को रखा था?

   (क) 1935 (ख) 1943 (ग) 1953 (घ) 1963

3. 'A Prologue to Population Geography' नामक पुस्तक किसकी रचना है?

(क) गार्नियर (ख) ट्रिवार्था (ग) क्लार्क (घ) जेलिंस्की

4. चांदना एवं सिद्धू की पुस्तक 'An Introduction to population geography' के अनुसार जनसंख्या भूगोल का संबंधन कितनी मूलभूत बातों से है?

(क) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 5

5. सामान्य रूप से जनसंख्या भूगोल के अध्ययन के कितने मुख्य क्षेत्र हैं?

(क) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 5

6. जनसंख्या भूगोल के अध्ययन के कौन उपागम प्रचलित नहीं है?

(क) क्रमबद्ध (ख) प्रणाली (ग) प्राचीन (घ) समकालीन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या भूगोल को परिभाषित कीजिए तथा इसके अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

(Define Population Geography and clarify its meaning)

2. जनसंख्या भूगोल का अर्थ एवं अध्ययन क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

(Explain meaning and scope of Population Geography)

3. जनसंख्या भूगोल को स्पष्ट करते हुए इसके अध्ययन के विभिन्न उपागमों का विवरण दीजिए।

(Clarifying Poplation Geography describe its different approaches to study)

1.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Hassan - Population Geography
2. Chandna - Geography of Population
3. Bhinde/Kanitkar - Principles of Population Studies
4. Hansraj - Population Studies

●●●

जनसंख्या जनांकिकी विज्ञान के रूप में
(Population as a Science of Demography)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (objective)
2.1 परिचय (Introduction)
2.2 जनसंख्या एवं भूगोल के बीच संबंध (Relationship between population and geography)
2.3 जनसंख्या, जनांकिकी विज्ञान के रूप में (Population as a Science of Demography)
2.4 सारांश (Summing-Up)
2.5 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
2.6 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को जनसंख्या का जनांकिकी विज्ञान के रूप में परिचित कराना है तथा जनांकिकी विज्ञान के संबंध में जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ को पढ़ने के उपरान्त विद्यार्थी जान पाएंगे कि-

1. जनसंख्या एवं भूगोल के बीच क्या संबंध है।
2. जनांकिकी विज्ञान का क्या अर्थ है।
3. जनसंख्या के अध्ययन को जनांकिकी विज्ञान क्यों कहा जाता है।
4. जनांकिकी किस प्रकार भूगोल विषय की एक स्वतंत्र शाखा मानी जा सकती है। इत्यादि।

2.1 परिचय (Introduction)

वर्तमान विश्व, जनसंख्या की समस्या से ग्रस्त है परंतु विकसित एवं विकासशील देशों के बीच इस समस्या की प्रकृति में पर्याप्त भिन्नता है। जहाँ कुछ देश जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि से त्रस्त हैं

वहीं कुछ देशों में ऋणात्मक वृद्धि की समस्या है। समस्या की प्रकृति में अंतर जरूर देखने को मिलता है परंतु इतना अवश्य है कि आज विश्व स्तर पर जनसंख्या स्वयं भी एक समस्य है एवं जनसंख्या कई अन्य समस्याओं का मूल आधार भी है इसके बावजूद मानव विकास की गति को लगातार कायम रखे हुए हैं। विकास की इस गति में जनसंख्या के घटक जन्म दर एवं मृत्यु दर में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है इन घटकों में विश्व स्तर पर भिन्नता की स्थिति पाई जाती है। इसी तरह जनसंख्या संबंधी अन्य विशेषताओं में भी विषमता की स्थिति पाई जाती है। दूसरी ओर, संसाधन का निर्माता और उपभोगकर्ता दोनों मानव अथवा जनसंख्या ही है, ऐसी स्थिति में जनसंख्या एवं इसकी विशेषताओं के अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है। यही नहीं, आजकल सर्वत्र सतत विकास की बात की जा रही है। अत: आवश्यक है कि इस सतत विकास के लिए जनसंख्या नियंत्रित हो, स्थिर हो। जनसंख्या संबंधी तत्वों की संस्थागत अध्ययन की जनांकिकी विज्ञान कहलाता है। (Institutionalised study of the population elements is called Demography) यही कारण है कि आज जनसंख्या एवं जनांकिकी दो भिन्न विषय वस्तु हैं तथा इन दोनों का अध्ययन अति आवश्यक है।

2.2 जनसंख्या एवं भूगोल के बीच संबंध (Relationship between Population and Geography)

सामान्य शब्दों में किसी निश्चित समयावधि के दौरान किसी क्षेत्र में निवास करनेवाले लोगों की संख्या को जनसंख्या कहा जाता है। वर्तमान समय में विश्व में विशेषकर विकासशील देशों में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या चिंताजनक स्थिति में पहुँच गई है। इससे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय भी चिंतित है। आज विश्व की जनसंख्या 6 अरब एवं भारत की जनसंख्या 1 अरब की सीमा को पार कर चुकी है। बढ़ती जनसंख्या के नियंत्रण तथा इसके स्थिरीकरण हेतु कई बातों पर बल दिया गया है, फिर भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकल सका है फलत: जनसंख्या शिक्षा पर आज जोर दिया जाने लगा है। 20 वीं शदी के चौथे दशक में अल्वामृडल ने अपनी पुस्तक 'फैमली एण्ड नेशन' में जनसंख्या शिक्षा का प्रतिपाद किया तथा इसे **'फैमिली एडुकेशन'** नाम दिया। कालांतर में छठे दशक में कोलंबिया विश्वविद्यालय के **प्रोफेसर डॉ० फिलिप एम हाउजर** एवं **एस थॉमस** ने इस शिक्षा की भूमिका तथा महत्व को नया आयाम दिया। भारत में भी जनसंख्या वृद्धि की समस्या के समाधान के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका के महत्व को स्वीकार किया गया है। परिणामस्वरूप, जनसंख्या की वृद्धि के प्रादेशिक स्वरूप में शिक्षा में अंतर के साथ अंतर आने लगा।

जनसंख्या संबंधी विशेषताओं के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन समय के संदर्भ में करना ही जनसंख्या भूगोल है। दूसरे शब्दों में भूगोल मानव-वातावरण में संबंधों का सामयिक एवं स्थानिक अध्ययन है इसी तरह जनसंख्या संबंधी तत्वों का अथवा विशेषताओं का सामयिक एवं स्थानिक अध्ययन जनसंख्या भूगोल है। भूगोल मूलत: मानव-वातावरण का अध्ययन है। इस दृष्टि से मानव अथवा

जनसंख्या भौगोलिक अध्ययन का एक मौलिक पक्ष है। मानव अथवा जनसंख्या संबंधी पक्ष का अध्ययन किए बिना भूगोल का अध्ययन अधूरा हो जाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित 1982 की रायो-डी जेनेरो में आयोजित पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में जनसंख्या एवं प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरण एवं जीवन में गुणात्मक विकास के बीच के संबंधों पर बल दिया गया। 1984 में काहिरा में जनसंख्या एवं विका पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अवधारणा के परिवर्तन की पुन: आवश्यकता महसूस की गई तथा जनसंख्या के साथ सतत् विकास पर बल दिया गया। जनसंख्या स्थिरीकरण तथा जनसंख्या एवं दूरगामी विकास के संबंधों की चेतना बढ़ाने पर बल दिया गया।

जनसंख्या एवं विकास के बीच अंतर्संबंध के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। वर्तमान परिदृश्य में विकास के स्तर में भिन्नताएँ देखने को मिल रही है यह भिन्नता यद्यपि कई कारणों से है, परंतु विद्वानों का मत है कि शिक्षा एवं संस्कृति के स्तर में परिवर्तन के अनुसार ही जनसंख्या का स्तर भी बदलता जाता है। जिन प्रदेशों में शिक्षा का स्तर ऊँचा है, वहाँ सांस्कृतिक विकास का स्तर भी उच्च होता है, परिणामस्वरूप, विकास का स्तर भी वहाँ उच्च होने से जनसंख्या अथवा मानव विकास सूचकांक भी उच्च होता है।

जनसंख्या वैज्ञानिकों का मानना है कि सामाजिक-आर्थिक विकास से जनांकिकी विशेषताओं विशेषकर जनसंख्या वृद्धि में परिवर्तन आता है, इसी तरह जनसंख्या वृद्धि में परिवर्तन से सामाजिक-आर्थिक वाले देशों (मुख्यत: कई अफ्रीकी देश) में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ही अधिक होता है, जो पिछड़ी अवस्था का प्रतीक है। दूसरी ओर उच्च सामाजिक-आर्थिक विकास वाले देशों (मुख्यत: कई यूरोपीय देश) में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ही कम होने से जनसंख्या वृद्धि भी कम हो जाती है। यह विकसि अवस्था का द्योतक है। इस सामान्य नियम के तहत विश्लेषण करने पर यह पता चलता है। कि विश्व के सभी देशों में जनसंख्या वृद्धि की यही प्रवृत्ति पाई जाती है। परंतु उनकी अवस्थाओं में अंतर होता है।

वर्तमान समय में सतत विकास की बात की जा रही है। परंतु सतत विकास के लिए जनसंख्या का स्थिरीकरण जरूरी है। जबतक जनसंख्या वृद्धि की गति पर नियंत्रण स्थापित नही होगा तबतक विकास या सतत विकास संभव प्रतीत नहीं होता है। अत: विश्व स्तर पर जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति, इसकी प्रादेशिक विषमता, जनसंख्या संबंध विशेषताओं एवं इसके प्रादेशिक एवं सामयिक परिवर्तन के विश्लेषण की आवश्यकता है। भूतकाल की जनसंख्या विशेषताओं एवं वर्तमान स्थिति के आधार पर भविष्य के लिए जनसंख्या पूर्वानुमान अथवा जनसंख्या की भविष्यवाण की जाती है तथा इसी आधार पर जनसंख्या संबंधी नीतियाँ बनाई जाती हैं। यही कारण है कि विकसित एवं विकासशील देशों की जनसंख्या संबंधी नीतियाँ में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। साथ ही इन नीतियाँ में भी समय के अनुसार बदलाव लाया जाता है। यही कारण है कि समय-समय पर संशोधित अथवा कई जनसंख्या नीतियाँ की घोषणाएँ की जाती हैं।